आस्था और विवेक

(साहित्य, संस्कृति और सिनेमा)

जितेन्द्र श्रीवास्तव

आस्था और विवेक

(साहित्य, संस्कृति और सिनेमा)

जितेन्द्र श्रीवास्तव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मार्च, 2023

© जितेन्द्र श्रीवास्तव

प्रो. अरुण होता

डॉ. कमलेश वर्मा और डॉ. सुचिता वर्मा

डॉ. मृत्युंजय पाण्डेय

और डॉ. चैनसिंह मीना

के लिए सप्रेम...

भूमिका

यह 'कविता का घनत्व' के बाद मेरी नई आलोचना पुस्तक है। 'कविता का घनत्व' एक विशेष प्रयोजन से लिखी गई पुस्तक है। उसके लेखन में 15 से अधिक वर्षों का समय लगा। इस नई आलोचना पुस्तक में 'रचना का जीवद्रव्य' (2016, जनवरी) के बाद से अब तक लिखे और बोले गए निबन्धों और व्याख्यानों के साथ ही डायरी से लिए गए नोट्स भी हैं। इस पुस्तक में विषयों की विविधता है। एक तरह से इसके केंद्र में साहित्य, संस्कृति और सिनेमा-तीनों हैं।

इस पुस्तक का नाम बहुत सोच-समझकर रखा गया है। समाज और जीवन-दोनों में आस्था के साथ-साथ विवेक की भी ज़रूरत पड़ती है। आस्थाहीन विवेक और विवेकहीन आस्था किसी काम के नहीं होते। इस पुस्तक में संकलित निबन्धों और व्याख्यानों में इस बात की पड़ताल करने की कोशिश पाठकों को अवश्य दिखेगी। रेणु की एक अत्यंत ईमानदार, साहसी और ज़रूरी कहानी 'आत्मसाक्षी' के विवेचन-विश्लेषण से इस पुस्तक की शुरुआत की गई है। मेरा मानना है कि आलोचक को भी लेखक की ईमानदारी का सम्मान करना चाहिए। कहानियों पर विचार के क्रम में ही सआदत हसन मंटो की कालजयी कहानी 'टोबा टेक सिंह' और कन्नड़ भाषा के

सुप्रसिद्ध लेखक आनन्द की अविस्मरणीय कहानी 'लड़की जिसकी मैंने हत्या की' पर विचार किया गया है। मेरा मानना है कि अन्य भारतीय भाषाओं के साथ जुड़कर हमारी संपन्नता बढ़ जाती है।

इस पुस्तक में तीन अलग ढंग की कथा सृष्टि करने वाली स्त्री कथाकारों के माध्यम से कहानी में स्त्री दृष्टि को समझने की कोशिश की गई है। इसी प्रकार प्रवासी लेखक तेजेन्द्र शर्मा की एक कहानी के विश्लेषण के माध्यम से यह रेखांकित किया गया है कि यथार्थ और विडम्बना की अचूक पहचान हो तो कहानी या किसी रचना को उल्लेखनीय होने से कोई नहीं रोक सकता। 'आवां' सिर्फ़ चित्रा जी का नहीं बल्कि हिंदी का एक ऐसा महत्त्वपूर्ण उपन्यास है जो मुम्बई के जीवन और ट्रेड यूनियन के यथार्थ को पूरी विश्वसनीयता के साथ अभिव्यक्त करता है। यही कारण है कि इस उपन्यास का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

कविताओं पर विचार करते हुए सबसे पहले इस सनातन प्रश्न पर ही विचार किया गया है कि 'कविता क्या है'। फिर अशोक वाजपेयी और अरुण कमल जैसे विशिष्ट कवियों के साथ ही मुग़ल बादशाहों की हिंदी कविता, पंडित हरिचंद अख़्तर, माधव कौशिक, वशिष्ठ अनूप, आदि कवियों पर विचार किया गया है। विवेचन में छंद में लिखी गई कविताओं को भी समान महत्त्व दिया गया है। मेरा मानना है कि छंद में हो या मुक्त छंद में-कविता में कविता होनी चाहिए। इस पुस्तक में दलित कविता,

प्रेमचन्द, नामवर सिंह और विश्वनाथ त्रिपाठी पर भी विचार किया गया है। इसमें एक निबंध राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर भी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह निबन्ध इस पुस्तक को एक वृहत्तर फ़लक देता है।

डायरी से लिये गए नोट्स की परिधि व्यापक है। निश्चय ही पाठकों को यह खण्ड पसंद आएगा। पुस्तक में संकलित चारों साक्षात्कारों में पर्याप्त विविधता है। इनमें मेरा व्यक्तिगत जीवन तो है ही, मेरी सोच भी है। पुस्तक का अंतिम निबन्ध (व्याख्यान) अमिताभ बच्चन की पहचान निर्मित करने वाली फ़िल्म 'दीवार' पर केंद्रित है। इस निबन्ध का शीर्षक बहुत कुछ कहता है। अब अलग से क्या कहूँ !

यह पुस्तक अब आपके हाथ में है इसकी गुणवत्ता का वास्तविक निर्णय तो आपको ही करना है। जहाँ तक इस पुस्तक के प्रकाशन का प्रश्न है तो इसका सारा श्रेय युवा आलोचक प्रिय डॉ. चैनसिंह मीना को जाता है। यह पुस्तक जिन लोगों को समर्पित है उनमें चैनसिंह भी एक हैं।

25 दिसम्बर, 2021

- जितेन्द्र श्रीवास्तव

अनुक्रम

भूमिका	3
रेणु और उनकी कहानी 'आत्मसाक्षी'	9
टोबा टेक सिंह : विभाजन का शोकगीत	17
लड़की जिसकी मैंने हत्या की : अस्वीकार का मानस	31
तीन स्त्री कहानीकार	46
विडम्बना की अचूक पहचान	53
कथा साहित्य के अध्यापन में नवोन्मेष	59
'आवां' के निहितार्थ	66
कविता क्या है ?	81
रास्ते की तलाश, विचारधारा का प्रश्न और कवि-कर्म	85
जहाँ नशा है जीवन अर्थात् अरुण कमल की कविताएँ	95
मुगल बादशाहों की हिन्दी कविता	107
सपने बचाने का स्वप्न देखती कविता	118
पहले से अधिक बेधक और ज़रूरी	128

आलोचनात्मक विवेक और मोहब्बत के शायर: पंडित हरिचंद अख़्तर 135

निर्वासित सपनों के पुनर्वास का स्वप्न : माधव कौशिक का काव्य संसार 143

वशिष्ठ अनूप की सर्जनात्मकता के निहितार्थ 170

देवेश पथसरिया : कविता का एक नया इलाका 181

प्रेमचन्द को क्यों पढ़ें ? 193

प्रेमचंद की प्रगतिशीलता 203

आलोचना में जीवन और संस्कृति का विवेक 211

हिन्दी दलित काव्य के अदेखे पक्षों का संधान 218

अनुवाद का सौंदर्य और ली मिन युंग का काव्य-संसार 224

नामवर सिंह होने का अर्थ 236

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा जगत का नव वसंत 244

डायरी से कुछ नोट्स **263**

साक्षात्कार **340**

जितेन्द्र श्रीवास्तव से डॉ. सुरेश चंद मीणा की बातचीत 341

यह 'थेरीगाथा' की भूमि है 347

(डॉ. रेखा सेठी से जितेन्द्र श्रीवास्तव की बातचीत)

हिंदी कविता : कल और आज जितेन्द्र श्रीवास्तव 351

(जितेन्द्र श्रीवास्तव से युवा आलोचक डॉ. चैनसिंह मीना की बातचीत!)

हिंदी दलित काव्य भारतीय समाज का सच है: जितेन्द्र श्रीवास्तव 380

(जितेन्द्र श्रीवास्तव से युवा आलोचक डॉ. चैनसिंह मीना की बातचीत)

सिनेमा **404**

दीवार: महज़ फ़िल्म नहीं, बदलते युग का मुहावरा भी 405